आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 01 | उदयपुर बुधवार 15 जनवरी 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

'जगे हम लगे जगाने देश, विश्व में फैला फिर आलोक' - महाकवि जयशंकर 'प्रसाद'

फोटो- कमलेश शर्मा

टोंक की चारबैत

- रामलाल माथुर -

चारबैत का मूल पठान संस्कृति में खोजा जा सकता है। मुस्लिम आक्रमणकारियों के साथ आए पठान लोग अपनी 'चारबैत' कला को भी साथ लाए जिसे वे ढफ बजाकर पश्तो भाषा में गाया करते थे।

इसका गायन प्रतियोगिता या दंगल के रूप में होता था। वे समस्यापूर्ति के लिए कोई विषय चुन लेते। चतुर आशुकवि अपनी काव्य-प्रतिभा के बल पर अपने दल की विजय दिलाता।

एक समय सहारनपुर के शाहजहांपुर तक पठानों का राज्य हो गया था। अफगानिस्तान के 'रोह' प्रदेश के निवासी रूहेले पठानों का यह इलाका रूहेलखण्ड कहलाया।

बाद में चारबैत का प्रचार हैदराबाद, रामपुर व टोंक में हुआ। पश्तो भाषा में चार पंक्तियों के विशेष तुक-युक्त छन्द को 'बैत' कहते हैं। उर्दू में इसे 'बन्द' कहा जाता है। चार 'बैतों' के समुच्चय को ही 'चारबैत' या 'चारबेत' कहते हैं। चारबैत की कविता में ओज होता है। पठानी प्रेम-गीत की बानगी-

रही न कोई शिकायत, न अब गिला दिल का
सुना दिया तेरे खंजर ने, फैसला दिल का
कहा जुबान से जो फिकरा, बेनजीर कहा
कहा जो मुझसे तो, पत्थर की ही लकीर कहा
कमान खींच के चिल्ले, में रखके तीर कहा
हम अपनी चुटकी में, रखते हैं फैसला दिल का।

कहते हैं कि भारत में 'चारबैत' के प्रथम प्रचारक अब्दुल करीम खां थे। वे कविता पश्तो व उर्दू में करते थे किन्तु उनकी भाषा लोकभाषा की तरह सीधी-सादी थी। लोगों ने इसे अब्दुल करीम खां की 'हिन्दी चारबैत' कहा। यह शैली लोकप्रिय हो गई।

शिष्ट उर्दूदां उस्तादों द्वारा बहिष्कृत किये जाने के कारण 'लोक' क्षेत्र द्वारा अपना ली गई और आज यह लोक-गायन विधा मानी जाती है। इसका प्रचलन केवल चार नवाबी रियासतों तक सीमित रहा जिसमें एक राजस्थान की रियासत टोंक सम्मिलित है।

टोंक के चारबैत गायकों की मान्यता है कि राजस्थान भी पठानों की तरह योद्धाओं की भूमि है। यहां भी सूरमाओं की तलवारों ने चिनगारियां उगलते गीतों का सृजन किया। योद्धा अपने परिवार से दूर तलवारों व तीरों के साथ में दिन-रात गुजारते। वे अपना खाली समय गुजारने के लिए गीत गाते रहते।

फोटो : डॉ. इकबाल सागर

टोंक की चारबैत कला में दस-बारह कलाकारों का एक दल होता है, जो विभिन्न विषयों पर रचे गीतों का समवेत रूप में गायन करता है। सामान्य दर्शक को पहली नजर में ऐसा लगता है कि वह कव्वालों का दल है किन्तु इसमें कव्वाली की तरह कोई अन्य साज नहीं, केवल हथेलियों व हाथों की उंगलियों द्वारा बजाया जाने वाला चंग होता है, जिसे वे ढप कहते हैं।

ये कलाकार समूह के रूप में खड़े होकर ढपली बजाकर गीत गाते हैं, साथ ही एक खास अन्दाज में घुटनों के बल उछल-उछल कर नृत्य भी करते हैं। कव्वालों की भांति ये कलाकार भी भावविभोर होकर पूरी तरह गायन को समर्पित हो जाते हैं। टोंक के चारबैत के कलाकार देशभक्ति, कौमी एकता, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक व प्रेम सम्बन्धी गीत गाते हैं। कभी-कभी मौके पर आशु कविता भी रच ली जाती है।

चारबैत दल सभी प्रकार के जातिगत भेदभाव भुलाकर धार्मिक संकीर्णता से परे गीत रचते व गाते हैं। कुछ बन्द इस प्रकार सुने गए हैं-

(1)
जब से जुल्मी सांवरिया / गए रूठकर
दिल पर सो बिजलियां / गिर पड़ी टूट कर

(2)
वो ही अनोखा लाला है / जिसने मोरा मन लिया
ओ री सखी तू भी आ / देख तो मोरा पिया
देख तो किस अन्दाज से / आ रहा मतवाला है।
कहते हैं काना उसे / नंद का वो ही लाला है।

ऐतिहासिक दृष्टि से टोंक में चारबैत की शुरूआत नवाब वजीरूद्दौला के समय से हुई। उन्होंने रामपुर के उस्ताद अब्दुल करीब खां की शोहरत सुनी तो तत्कालीन रामपुर नवाब फैजुल्ला खां से चारबैत के किसी नामी उस्ताद को टोंक भेजने का अनुरोध किया।

रामपुर नवाब के कहने पर उस्ताद अब्दुल करीम खां ने खलीफा करीम खां निहंग को टोंक भेजा। इस प्रकार करीम खां की सरपरस्ती में टोंक में यह कला पनपी, जिसे इसके कलाकार स्वयं लोक-संगीत के अन्तर्गत मानते आए हैं।

पहले टोंक में चारबैत का कोई पगड़ीबन्द उस्ताद नहीं था, किन्तु जबसे दस्तारबन्दी का सिलसिला शुरू हुआ, तो सबसे पहले पगड़ीबन्द उस्ताद अब्दुस्सुबूर खां हुए। वे पुराने टोंक के मोहल्ला बटवालान में रहते थे। उनके बाद अनेक उस्तादों ने चारबैत को आगे बढ़ाने में योगदान दिया।

Archi Royal City

आपका घर – आपके बजट मे

PREMIUM FLAT

Project at
Airport Main Road Opp. Transport Nagar

RERA Approved

RERA Reg. No.: RAJ/P/2018/625

Ongoing Projects

Archi PEACE PARK

New Vidhya Nagar, Hiran Magri, Sec. 4
BSNL Road, Udaipur (Raj.)
Phase 1 Rera Reg. No.: RAJ/P/2019/1027.
Phase 2 Rera Reg. No.: RAJ/P/2019/1028.

ARCHI ARCADE

1 - New Bhupalpura, Behind Laxman
Vatika Nr. Jain Temple, Udaipur-313001
RERA Reg. No.: RAJ/P/2019/964

Upcoming Project

Archi Lovenest

Plot No. 1, Manwa Kheda, Opp. Geetanjali
Hospital, Teh. Girva, Udapur (Raj.) 313001
RERA Reg. No.: RAJ/P/2019/1156

Developer
ARCHI CIVIL CONTRUCTION PVT. LTD.
Ground Floor, Archi Arihant Building, 100 ft. Road towards
DPS Sobhagpura Circle, Udaipur - 313001
Web: archigroup.in | lokesharchigroup@gmail.com

Site Address
Opp. Transport Nagar, Pratapnagar
Airport Road, Udaipur - 313001 (Raj.)
For Booking Contact:
8003597907, 9588016563

स्मृतियों के शिखर (91) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अंधेरे समाज में उजला संसार बनाया गुलाबो ने

पहलीबार जब गुलाबो का नाम सुना और उसका प्रदर्शन देखा तो मैं विस्मित चकित इसलिए भी हुआ कि इससे पूर्व कालबेलियों, सपेरों में ऐसा नृत्य कभी नहीं देखा गया न सुना ही गया। अकेली गुलाबो ने ही बड़े ही आकर्षक रूप में अपने अंगों को तोड़-तोड़, मोड़-मोड़, मरोड़-मरोड़ जो भंगिमाएं दिखाईं वह बिजली से भी अधिक स्फूर्तिवान थिरकन लिये थीं। इन्द्रधनुष से भी अधिक तनी हुई विविध रंगी आभा लिए थीं और लगातार यह लग रहा था कि यह सब नजारा और ऐसा करिश्मा दिखाने वाली गुलाबो विधाता की कोई अजूबी, अनूठी तथा असाधारण रचना है जो धरती पर अन्य किसी भी प्राणी की नहीं हो सकती।

यही नहीं, गुलाबो नाम भी मैंने पहले किसी महिला का नहीं सुना था। महिलाओं में गुलाबी और पुरुषों में गुलाबा नाम तो अभी भी मिलते हैं। सन् 1959-60 में जब कठपुतलियों की विविध शैलियों के अध्ययनार्थ मैंने राजस्थान तथा उसके पड़ोसी राज्यों की यात्राएं कीं तो पता चला कि गुलाबो-सुताबो नाम से उत्तरप्रदेश में बड़ी चर्चित पुतली शैली रही।

इसमें दस्ताना शैली की तरह ही दोनों हाथों में पुतलियां पहनकर करतब दिखाया जाता था। कोई-कोई निष्णात कलाकार अपने एक ही हाथ के अंगूठे तथा उसके पास वाली ऊंगली में पुतलियां पहन बड़ी खूबी और खूबसूरती के साथ बड़े ही रोचक संवाद में गजब ढा देता था। नृत्यांगना गुलाबो भी जब अपने नृत्य में फिरकनी की तरह अपने को विस्मृत कर नृत्यनिरत हो जाती है तब लगता है वह अपने साथ सबको ही भमरी की तरह टूंगाती हुई अपने आत्मरूप में निमग्न कर रही है।

अन्ततोगत्वा भाग्य ही प्रबल होता है जो किसी को वह कुछ बना देता है जिसकी कल्पना किसी को नहीं होती। पूर्वाभास भी नहीं होता। कोई संकेत या आहट भी किसी प्रकार कोई इशारा नहीं देती लगती, बल्कि सब कुछ बुझ जाने के बाद जब चारों ओर से घना अंधेरा ढक दिया जाता है तब भी कोई बुझी-बुझी आशा की किरण प्रज्वलित होती है जो सर्वथा असम्भव लगती है। शब्द-कोश या किसी कोश में ऐसा नहीं मिलता। सपने में ही ऐसा परिदृश्य कभी किसी के पल्ले पड़ जाता हो किन्तु यथार्थ में घटित हुआ राजस्थान की कालबेलिया जाति की विश्व-विख्यात नृत्यांगना गुलाबो के साथ।

सपेरा परिवार जो खानदानी रूप में सांप पालने के लिए प्रसिद्ध है। सांप जो काल को बेल देने की सामर्थ्य लिये होते हैं। वे ही तो कालबेलिये होते हैं। अपने परिवार की तरह सांपों के परिवार के साथ अपनी जीवन-धारा को जोड़ने वाले कालबेलिये ही होते हैं।

सांपों की कथा-व्यथा और उनके दृश्य-अदृश्य कला-करिश्मों को कालबेलियों से अधिक कौन जानेगा! उन्हें विश्वास में लेकर यदि पूछना की जाय तो उनके पास ज्ञान की जो गठरी है वह शायद ही किसी के पास हो। उनकी दृष्टि में तो पूरी धरती को शेषनाग ने ही अपने फन पर टिकाये रखी है। एक छतरी की तरह शेषनाग उसकी डंडी की तरह मूल में है और आठ तानियों की तरह आठ दिग्पालों ने उसे थाम रखा है।

शेषनाग सहस्त्र फन लिये है। हमने तो एक फन वाला सांप ही देखा है। इससे अधिक फन वाला सांप कैसा भयावह होता होगा, कल्पना करने पर ही कंपकंपी से काया कल्पित हो उठती है। यह डर है जो, लगता है, पैदाइशी से ही हमारे मन में पैठ बना लेता है।

यों सांप किसी को डराते नहीं हैं अलबत्ता वे तो खुद ही मानव जीवों से डरते हैं। इसीलिए हमारे बीच सर्प देव के रूप में लोकदेवता कल्लाजी राठौड़, देवनारायणजी, ताखाजी, तेजाजी जैसे देव हमारी रक्षार्थ पूरे राजस्थान और अन्य कई प्रान्तों में पूजित हैं।

गुलाबो का बचपन ही सांपों के साथ खेलने-कूदने-नाचने में बीता। सांप के बच्चे उसे बड़े मोहक आकर्षक तथा छूने पर रपट देने लगते थे। सर्पिणी के अण्डों से बच्चे निकलते ही भागमभाग और उछलकूद मचाना शुरू कर देते। सांपणी अपनी काया का घेरा बनाकर अपनी खोल में बमुश्किल रखती है अन्यथा वे किसी की पकड़ में ही कैद नहीं हो सकते।

यह सब रंग गुलाबो बड़ी बारीकी से देखती और मन ही मन विचारणा करती, क्या ही अच्छा हो, मैं भी इनकी ये सब प्यारी स्नेहिल और सुखझर हरकतें अपने में मूर्तिवन्त कर सकूं। कहते हैं, धुन को जो ध्यान की तरह अपने में धार लेता है वह बाजी मार लेता है सो गुलाबो ने धुर बचपन में ही अपनी काया को बाल-सर्पिणियों की तरह हमदम कर दिया।

लेकिन यह घटना तो गुलाबो के पुनर्जीवन की है। मरण हुए, दफन हुए जीवन के पुनर्भरण की है। जीवन-मरण के मरण-जीवन की है। सर्वथा अविश्वास भरे विश्वासी की है। हमारे यहां बालिका जीवन को खुशहाली जीवन माने जाने की धारणा पारम्परिक रूप से ही अच्छी नहीं मानी गई। बालक होने की आश में यदि बालिका ही जन्म लेती रहे तो उसका नाम ही अणचाही, रोड़ी, बगदी, कचरी जैसे तिरस्कार भरा रख दिया जाता है। गुलाबो के साथ इससे भी भयंकर दिल दहला देने वाली घटना घटी। जब एक-के-बाद-एक कर सातवीं बालिका के रूप में गुलाबो का जन्म हुआ तो समाजजनों को ठीक नहीं लगा। पिता घर पर नहीं थे और मां को चुप रहने की मजबूरी थी सो लोगों ने उस नवजात को जंगल में ले जाकर जीवितावस्था में ही गाड़ दिया। अन्यों का पत्थर दिल हो सकता है पर मां का दिल इतना निर्मम और कठोर कदापि नहीं हो सकता सो उसने अपनी छोटी बहन से गिड़गिड़ाते कहा, तेरे तो पांचों बेटे हैं सो बेटी के नाम पर तू ही उसे अपने पास रख ले, वह बच जायेगी। इस पर उसका मन पसीज गया। रात को अंधेरे गुप्प में उस गाड़ी हुई बेटी की सुध ली गई।

चुपचाप वह गड्ढ़ा खोदा गया। देखा तो उसकी सांस चल रही थी। पिता ने ज्योंही उस बच्ची को देखा तो उनके हर्ष का पार नहीं रहा। सहसा उनके मुंह से निकल पड़ा, कुछ बड़ा काम करने के लिए ही यह बची रही सो परिवार का ही नहीं, जाति का नाम भी रोशन करेगी। पिता की यह वाणी फलीभूत हुई। आज तो गुलाबो पूरे विश्व में अपने नृत्य से सबकी आंखों का तारा बनी हुई है। कालबेलिया जाति तो उससे गर्वित हुई ही, देश का पूरा लोकमानस ही गौरव की अनुभूति लिये है।

गुलाबो बताती है, तीन साल की होते-होते तो उसने पूंगी की धुन को अपने अन्तस में बिठा लिया और सांपों के साथ डोलने लग गई। यह वह समय था जब समाज में लड़कियों के नाचने पर घोर पाबन्दी थी। छूट थी तो केवल पुष्कर के धार्मिक मेले में नाचने की तब कोई आठ-नौ वर्ष की उम्र रही होगी, वह अपनी बाल-गोठियों के साथ खूब मन भर वहां नाची तब ही याद आता है पर्यटन विभाग की एक बाईजी की निगाह ने उसे चुरा लिया।

वे पास आकर बोलीं, 'स्टेज पर प्रोग्राम दोगी?' गुलाबो ने उत्तर दिया- 'नहीं, मुझे नाचना नहीं आता है।' वो बोलीं- 'ऐसे ही जैसे अभी नाच रही हो।' यह कह उनने बड़े ही स्नेहिल भाव से मुझे पांवों में बांधने के घुंघरू दिये। पूंगी की उसी धुन पर जब घंटियों की मधुरिमा शुरू हुई तो मेरे पांव जैसे हवा में थिरकने लगे। मैं स्वयं अपने को भूल गई। वह कार्यक्रम सबको मनभावन लगा। तालियों की गड़गड़ाहट ने मेरा हौंसला आकाश तक पहुंचा दिया।

भारी उत्साह लेकर गुलाबो अपने स्वजनों के साथ गांव पहुंची तो वहां का वातावरण देख सब बुरी तरह भीग गये। जोरदार हंगामा मचा। तरह-तरह की अनमनी बातें सुनने को मिलीं। इसी बीच जयपुर से बुलावा आया। समाज तो अडिग था। ऐसी स्थिति में रानी साहिबा गायत्रीदेवीजी ने समाज वालों को भरोसा दिलाया और हमें भरोसा बंधाया कि सब कुछ अच्छा होगा। यह काम कोई गलत नहीं है। समय आने पर समाज को भी नाज़ होगा।

गुलाबो उत्साहजनित अदा में सुनाती है, 'इस कार्यक्रम से लगा जैसे मेरा स्वर्णिम सफ़र प्रारम्भ हुआ है। सन् 1985 में भारत महोत्सव का बुलावा तो मेरे लिए सोने में सुहागा ही बना। वाशिंगटन में 65 दिन कैसे निकले। हर दिन जैसे मैं दर्शकों की हथेलियों में बांसों उछाल खा रही हूं। सपने में भी नहीं सोचा था। याद करती हूं उस ठेठाठेठ बचपन को जहां जमीन में दफना दी गई और अनचाही जिन्दगी मिली तो सबकी चाह बन गई।'

'देश तो देखा सो देखा, लगता है देश से अधिक परदेश देख लिया है। अनगिनत कार्यक्रम। अटूट प्यार। असीम स्नेह। भारत से अधिक भारत के बाहर मुझे हथेलियों में उठाये रखने वाली मेरी प्यारी शिष्याएं।'

'सबसे पसंदीदा मुझे फ्रांस लगा। वहीं सर्वाधिक मेरी आरती उतारने वाली शिष्याएं। किसी ने पूरी किताब ही मुझ पर लिख दी। एक ने तो अपनी बेटी का नाम ही रोज रख दिया। बोली, अंग्रेजी में यह नाम मेरे ही नाम पर है।'

गुलाबो के पास संस्मरणों का, आप बीती घटनाओं का खजाना है जो अखूट है। सुनते जाओ। अब उसके पास फुर्सत नहीं फटकती। सबके सम्पर्क में आकर, सब दूर भ्रमण कर, घाट-घाट का पानी पीकर वह सब सीख गई है। मेंहदी को मुट्ठी में रचाकर जो सुख पाती हैं, उसी तरह नृत्य को अपने अंग-अंग में फुरका कर वह अलबेली बनी रहती है।

मंच पर गुलाबो जब पूंगी की धुन पर फनकार देती है तो वह अपनी समग्रता में संपनी सी बलखाती, उछाल भरती, तरंगित होती पूरे मंच को ही बांध लेती है तब लगता है अपनी नजरों में उसने सबको ही बांध लिया है। कभी पूंगी सी तो कभी उसकी धुन की धुनक बन पूरी समां को बांध लिया है। प्रकृति जैसे रूपसी बन अनेक रूपाकारों में शत-सहस्त्र रंगावलियों के बीच किसी अन्य लोक में अलौकिक बन हमारे समक्ष लमछराती गुलबदन गुळळ-गुळळ हो रही है।

गुलाबो अब वो गुलाबो नहीं रही। वही होती हुई भी वह नहीं है। आप जितनी कल्पना कर सकें तब भी पूरी नहीं होगी। यह देश तो उसका अपना है ही पर परदेश भी उसका अपना कम नहीं है। यहां से अधिक बाहर शिष्याएं हैं जो गुलाबो से सीख गुलाबी होती हुई अन्यों को गुलाबी गंध से सराबोर कर रही हैं।

गुलाबो पढ़ी नहीं है पर उसके अनुभव जगत ने पूरी दुनियां उसे पढ़ा दी है। वह गर्व से अपने अनेक संस्मरणों की पोटली नहीं, पोटला लिये है। वहां उसकी क्लासें चलती हैं। उसका अंग्रेजी नाम रोज है। ऐसे रोज नाम विदेश में बालिकाओं के हैं जो गुलाबो की स्थायी स्मृति को अपने साथ गोदे हुए हैं। वह जहां भी रहे, अपने साथ अपने देश की, अपनी जाति की, अपनी परम्परा की गंध लिये है। अपनी पहचान में उसने कालबेलिया, सपेरा को सोने में सुहागे की तरह जड़ दिया है। वह चाहती है कि उसके साथ उसका कालबेलिया घराना ही पूरी पहचान बने ताकि हर युग का हर काल उसके घराने को काल देता हुआ कालबेलिया बनाता रहे।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 जनवरी 2020

सम्पादकीय

आश्वासनों और घोषणाओं का अंबार

नया वर्ष आने पर हर व्यक्ति कुछ समय के लिए ही सही, नया सोचने, नया कुछ करने और नया बनने की सुध लिए रहता है। यह अच्छी बात है यदि वह इसे श्मशानी बैराग्य में नहीं ले। 'नई बात नौ दिन की और खेंची ताणी बारह दिन की' कहावत भी इसी के साथ सुनने को मिलती है। यह गम्भीरता से चिन्तन करने की बात है।

इसके लिए हमें अपने आप का ही मूल्यांकन करना होगा। व्यक्ति सदैव एक सा नहीं रहता। उसकी जिम्मेदारियां भी अलग-अलग प्रसंगों में जुदा-जुदा हो जाती हैं जिनका निर्वाह करना उसके लिए आवश्यक होता है। इसीलिए कहा जाता है कि एक व्यक्ति को अपने चेहरे पर भांति-भांति के चेहरे धारण करने पड़ते हैं। ये ही चेहरे, मुखौटे नाम से प्रदर्शन के दौरान व्यक्ति अपने मुंह पर धारण करता है। कई लोग मुखौटों की बजाय मेकअप में सजते-धजते तरह-तरह के चेहरे बनाते हैं।

व्यक्ति ज्योंही कुछ जिम्मेदार बनता है या समाज सेवा के क्षेत्र में अगुवा बनता है वह अपने को कर्त्ताधर्त्ता मान बैठता है और जन जीवन में प्रशंसनीय बनने के लिए निरन्तर आश्वासन देता और बहुत कुछ करने की घोषणा करता नजर आता है। कुछ लोग तो अपने कहे का ध्यान रखते हैं और उसका निर्वाह भी करते हैं पर ऐसे लोग अधिक हैं जो फैंकते, फांकते हुए अपना वर्चस्व बनाना चाहते हैं। खासतौर से राजनीति के क्षेत्र में ऐसी चालबाजी बहुत होती है। ऐसे लोगों को मौका आने पर जनता भी अन्ततः नकार देती है। इसलिए आवश्यक है, हम अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह जिम्मेदार व्यक्ति की तरह करें। बिना आश्वासन और घोषणा के भी हम वह कार्य कर गुजरें जिसकी हमसे अपेक्षा है और हम स्वयं भी उसे करने की अपनी जिम्मेदारी समझते हैं।

यहां यह भी जरूरी है कि हम अपने को सीमा से अधिक अभिव्यक्त न करें। स्वयं बड़े बनने की कोशिश न करें। न भ्रमित हों और न अन्यों को भ्रमित करने की कोशिश करें। कोई भी ऐसी बात भी न करें जिससे समस्या का निराकरण तो दूर उल्टी हमारे कथन से वह हास्यास्पद बन जाय।

सूरज वही है, प्रकृति वही है, जन जीवन भी वही है फिर वह क्या है जो नये वर्ष पर हमें सब कुछ नया लगने का अहसास कराती है। वह हमारी दृष्टि है। अतः हम हमारी दृष्टि को खुला और फैला हुआ रखें। यह सोचें कि हर जड़ चेतन जो भी है, सबमें कुछ-न-कुछ वह है जो हमें मालूम नहीं है। उसे हम खोजें।

वैज्ञानिक यही तो कर रहे हैं। नित नये-नये आविष्कार भी हमें यही प्रेरणा और सीख देते हैं। सीखने और प्रेरणा प्राप्त करने की क्षमता को विकसित करें तो हर क्षण ही हमें नया और नव्य-भव्य लगने लगेगा। नया वर्ष सबके लिए नया हर्ष लिए नई-दृष्टि सम्पन्न बने।

शब्द रंजन के स्थापना दिवस पर सभी पाठकों, विद्वानों, विज्ञापनदाताओं का हार्दिक आभार।

'खोजना होगा अमृत कलश' के लिए राजन सम्मानित

युवा मंडल संस्थान, बारां द्वारा राजकुमार जैन 'राजन' को उनके कविता संग्रह 'खोजना होगा अमृत कलश' के लिए 'श्रीमती कमलादेवी स्मृति सम्मान' के तहत प्रशस्तिपत्र, स्मृतिचिन्ह एवं नगद राशि प्रदान की गई। समारोह की अध्यक्षता डॉ. उमेशचन्द्र शर्मा ने की।

नरेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, जितेन्द्र निर्मोही तथा दिलीप शाह विशिष्ट अतिथि थे। प्रस्तुत कृति पंजाबी, गुजराती, असमिया, मराठी, नेपाली, सिंहली एवं चीनी भाषा में भी अनूदित होकर प्रकाशित है। आयोजन में कुंजबिहारी नागर, डॉ. कृपाशंकर शर्मा, रामनारायण हलधर, डॉ. सुरेन्द्र यादवेन्द्र, बाबू बंजारा, गौरीकान्त शर्मा, विनय जोशी, डॉ. चेतना उपाध्याय, डॉ. क्षमा चतुर्वेदी, विश्वमित्र दाधीच, जितेन्द्र शर्मा 'पम्मी' उपस्थित थे।

डॉ. वशिष्ठ की रामजीवन पर चर्चा

शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. आर. के. वशिष्ठ ने 04 जनवरी 2020 को डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। उन्होंने विशेष रूप से रामायण-महाभारत से सम्बन्धित गाथा-गायकी से जुड़े साहित्य पर चर्चा की।

डॉ. भानावत ने उन्हें कावड़, रामदला की पड़, राम रमैया तथा पड़ कावड़ कलंगी पुस्तकें भेंट की। उल्लेखनीय है कि डॉ. वशिष्ठ राजस्थान विश्वविद्यालय में चित्रकला विभाग के प्रोफेसर रहे और राजस्थान की चित्रकला, चित्रकार और उनकी देन पर लिखने वाले अधिकृत लेखक तथा समालोचक के रूप में अखिल भारतीय ख्याति लिये हैं। उनके साथ धनु वशिष्ठ भी थे जो एनीमेशन आर्ट में रामकथा पर कार्य कर रहे हैं।

डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित नहीं रहे

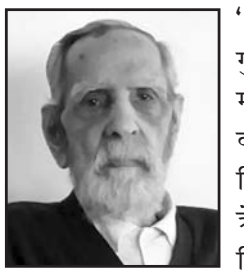

सर्जना वाङ्मयीन हो अथवा कला-रूपिणी, वह अन्तःप्रेरणा-जनित होती है। वय, परिवेश तथा शिक्षा उसके विकासक, परिवर्तक अथवा समृद्धिकारक साधन मात्र हैं। नवीं कक्षा के छात्र रहते गद्य-गीत के साथ लेखन क्षेत्र में पदार्पण कर हिन्दी, संस्कृत में एम.ए. तथा रस-सिद्धान्त पर दीक्षितजी ने पीएच.डी. की।

गोरखपुर, राजस्थान तथा पुणे विश्वविद्यालय में आचार्य तथा अध्यक्ष रहकर 1985 में वे सेवानिवृत्त हुए। विस्तृत आलोचना-संयुत सम्पादित ' बेलि क्रिसन रुकमणी री' उनका बहुमानित पहला ग्रंथ है। अन्य में डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानन्दन पन्त, मराठी सन्तों की हिन्दी वाणी, साहित्य-सिद्धान्त और शोध, त्रेताः एक अन्तर्यात्रा, हिन्दी रीति-परम्पराः विस्मृत सन्दर्भ एवं भक्ति-चेतना और हिन्दी साहित्य जैसी कृतियां हैं।

षष्ठिपूर्ति पर उन्हें 'वाग्विकल्प' अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया। 'समीचीन' पत्रिका ने उन पर विशेषांक प्रकाशित किया। डॉ. त्रिभुवन राय ने 'आनन्दप्रकाश दीक्षितः व्यक्तित्व और दृष्टि' पुस्तक सम्पादित की। साहित्यिक मित्रों तथा छात्रों द्वारा 'शब्दकल्प' प्रकाशित कर भेंट किया गया।

पश्चिम जर्मनी, इटली, इंग्लैण्ड तथा सात यूरोपीय देशों की यात्रा कर वहां के विश्वविद्यालयों में विविध विषयों पर व्याख्यान दिये। समय-समय पर अनेक सभा-संस्थाओं, अकादमियों तथा समितियों द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किये गए। करीब 94 वर्ष की उम्र में 05 नवम्बर 2019 को पुणे में उनका निधन हो गया।

- डॉ. मधुरिमा दीक्षित

प्रो. सतीश मेहता को शिक्षक सम्मान

बीकानेर। जैन पीजी कॉलेज के पूर्व छात्रों ने 28 दिसम्बर 2019 को रि-यूनियन 1982-95 बेचमेंट के तहत यादें नामक समारोह में प्रो. सतीश मेहता को शिक्षक सम्मान से नवाजा गया। समारोह में कुणाल कोचर तथा डॉ. धनपत जैन के अनुसार प्रबन्ध समिति के मंत्री नरेन्द्र कोचर, उपाध्यक्ष निहालचन्द कोचर, डॉ. धनपत कोचर, सुशील बैद, किशोर बांठिया ने मुख्य अतिथि बीकानेर पूर्व की विधायक सिद्धिकुमारी तथा लुणकरणसर के विधायक सुमित गोदारा का भावभीना स्वागत किया।

सायंकालीन सांस्कृतिक समारोह में कला-संस्कृति मंत्री डॉ. बुलाकीदास कल्ला ने पूर्व प्राचार्य डॉ. सुमेरचन्द जैन, प्रो. एल. एन. खत्री, डॉ. अनिल शर्मा, डॉ. एन. बिन्नानी, डॉ. अजय जोशी, डॉ. अशोक शर्मा को सम्मानित किया गया। छात्रों द्वारा महाविद्यालय को सौ कुर्सियों का उपहार दिया गया।

- कुणाल कोचर

चंद्रप्रकाश चित्तौड़ा सेवानिवृत्त

उदयपुर। श्री चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा राजकीय मुद्रणालय से हेड बाइण्डर के पद से 39 वर्षीय सेवा के पश्चात दिसम्बर में सेवानिवृत्त हुए। गत दो दशक से ये सूक्ष्म पुस्तिका निर्माता कलाकार के रूप में अपनी पहचान बनाये हुए हैं। विभिन्न राजनेताओं, कलाकारों, साधु-सन्तों, समाजसेवियों, फिल्मी अभिनेताओं, रणबांकुरों से सम्बन्धित अब तक सात सौ से अधिक पुस्तिकाएं भेंट कर चुके हैं। यह कार्य कागज, चावल, चमकीले मोती, चीणों आदि पर बड़ी खूबसूरती से उकेरा गया है। माचीस की तिलियों, स्टेपलर की पीनों तथा मूंग-कणों से भी सूक्ष्म आकृतियां कोरने में इन्होंने महारत हांसिल की है।

रक्षामंत्री द्वारा डॉ. धींग का सम्मान

अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक डॉ. दिलीप धींग का केन्द्रीय रक्षामंत्री राजनाथसिंह द्वारा सम्मान किया गया। यह सम्मान उपाध्याय मूलमुनि जन्म शताब्दी समारोह शुभारंभ के उपलक्ष्य में जैन दिवाकर अहिंसा सेवा संघ, इन्दौर की ओर से आयोजित कार्यक्रम में डॉ. धींग की उल्लेखनीय श्रुतसेवाओं के लिए किया गया।

- संपत बागमार

चिक हेयर कलर बना चिक ईज़ी

उदयपुर। केविनकेयर ने उदयपुर में अपने ग्राहकों के लिए 'चिक हेयर कलर शैंपू' को 'चिक ईजी' के रूप में पेश किया है। नाम से ही पता चलता है कि चिक ईजी पारंपरिक हेयर कलर का इस्तेमाल करने वाले लोगों को अनूठा और बेहद सुविधाजनक उत्पाद है, जिसे आसानी से प्रयोग किया जा सकता है। 'सुविधा' और 'किफायत' के इस अनूठे और सबसे जरूरी संगम के साथ बालों को रंगने के वैसे ही अद्भुत परिणाम दिख सकते हैं, जैसे चिक हेयर कलर शैंपू में दिखते थे।

वेंकटेश विजयराघवन, निदेशक एवं मुख्य कार्य अधिकारी - पर्सनल केयर एंड अलायंस ने कहा कि यह उत्पाद पेश करने के पीछे ब्रांड का लक्ष्य अपने मजबूत वितरण ढांचे का फायदा उठाना और निष्ठावान उपभोक्ताओं तक पहुंचने के लिए उदयपुर के बाजारों में गहरी पैठ बनाना है।

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड-टू-बी विश्वविद्यालय)

GRADE 'A' ACCREDITED BY NAAC

प्रतापनगर, उदयपुर - 313001 (राजस्थान) फोनः 0294-2492441 फैक्स : 0294-2492440

E-mail : admissions@jrnrvu.edu.in

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

संचालित पाठ्यक्रम

माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, फोन : 0294-2413029|2410776, मो. 9829160606

Faculty of Social Sciences & Humanities

•BA •MA •एम.फिल डिप्लोमा कोर्सेज : •पीजी डिप्लोमा इन जी.आई.एस. एण्ड रिमोट सेन्सिंग, बी.जे.एम.सी., पंचगव्य पद्धित (थैरेपी)।

सर्टिफिकेट कोर्सेस : •स्पोकन इंग्लिश, प्रोफिशियंसी इन इंग्लिश एण्ड कम्प्यूनिकेशन स्किल्स, कल्चर ऑफ राजस्थान, रिसर्च मेथड्स एण्ड डेटा एनालिस्ट, ह्युमन राइट्स।

Faculty of Commerce फोन : 0294-2413029,2410776, मो. 9460275655

•B.Com. •BBA •M.Com. •M.I.B. •एम.फिल.,
•मास्टर ऑफ एन.जी.ओ. मैनेजमेन्ट।

डिप्लोमा कोर्स : •पी.जी. डिप्लोमा इन ट्रेनिंग एण्ड डवलपमेन्ट।

सर्टिफिकेट कोर्सेस : •प्लास्टिक प्रोसेसिंग एण्ड मेन्युफेक्चरिंग स्किल्स, टेली, गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स (जी.एस.टी.)।

Faculty of Science फोन : 9461179656, 9461109371

•**B.Sc.** (Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology)
•**M.Sc. Chemistry** (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
•**M.Sc. Mathematics**

ज्योतिष विज्ञान विभाग, मो. 9460030605

•एम.ए. ज्योतिर्विज्ञान •डिप्लोमा ज्योतिष •डिप्लोमा वास्तु •प्रमाण पत्र-ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा, पूजा पद्धति कर्म काण्ड, वैदिक संस्कार संस्कृति (रविवार)

Evening College मो. 9829332300

बी.ए., बी.कॉम, एम.ए., एम.कॉम सभी विषय, एम.ए., एम.एस.सी. (मनोविज्ञान) एम.ए. (म्यूजिक), बी.लिब, एम.लिब, बी.एड. (स्पेशल एम.आर.), डी.सी.बी.आई, डी.एड (आर.सी.आई से मान्यता प्राप्त), पीजी डिप्लोमा इन गाइडेंस एवं कांउसलिंग, बी.जे.एम.सी. एवं डी.जे.एम.सी.।

Department of Physical Education Phone: 9352500445
•Diploma in Yoga •M.A. in Yoga •M.A. In Physical Education

Department of Physical Education मोबाइल : 9829943205, 9352500445

•मास्टर ऑफ फिजिकल एजुकेशन (M.P.Ed.) •MA (YOGA Education)

Department of Law मोबाइल 9414343363

•LL.B.(3 Years) •LL.M. (2 Years) •B.A.LL.B (5 Years) •PGDCL •PGDLFS •PGDLL

Department of Physiotherapy फोन : 0294-2656271 मो. 9414234293

•Master of Physiotherapy •Bachelor of Physiotherapy
•Fellowship in palliative care and oncology rehabiliatation
•Fellowship in neurological rehabiliatation

Faculty of Computer Science & Information Technology

फोन : 2494227, 2494217, मोबाइलः 9887285752, 9414737125

•**MCA** •**M.Sc.** (Computer Science)
•**PGDCA** •**BCA** • **MCA** (Lateral Entry)

Rajasthan Vidyapeeth Technology College

मो.9950304204 फोनः 0294-2490210

Diploma in Engineering (Polytechnic)

- Civil Engineering • Electrical Engineering • Mechanical Engineering
- Electronic Engineering & Communication Engineering
- Computers Science Engineering

Department of Pharmacy (फोन 0294-2492440, 9414869044

- D. Pharma (Diploma in Pharmacy)

Institute of Rajasthan Studies (फोन 0294-2491054)

•M.A.. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)
•PG Diploma - पुरातत्व विज्ञान (Archaeology)

Udaipur School of Social Work (फोन 0294-2491809)

•MSW •PG Diploma-HRM • Rural Development (PGDRD)
•PG Diploma- •NGO Management • Talent Managemnt

Directorate of Janshikshan & Extension Programme

(फोन : 2490723, 9414737125)

•PG Diploma in Criminology & Police Science
• Diploma in Criminology & Police Science

School of Agricultural Sciences

• B.Sc. (Hons.) Agriculture (कृषि)• Diploma Course

Department of Travel. Tourism & Hospitality

Faculty of Management Studies 9950489333

Course Name	Duration of Course	Eligibility
BBA (Tourism & Travel) with Specialization in Hospitality	3 Years	12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Foord & Bevrage Service	1 Year	12th Pass in any stream
Diploma in Hotel Management (Food Production)	1 Year	12th Pass in any Stream

Girls College, Dabok

(फोनः 0294-2655223,मो. 9694881447)

•B.A.• B.Com.• B.Sc.• M.A. • M.Com • M.A. (Hindi, Pol. Sc., History, Geog, Sociology, Economics) • M.Com (Accountancy)
• Special classes for English Speaking and Computer Basics

R.V. Homeopathic Medical College & Hospital, Dabok

(फोन : 0294-2655974, 2655975, मोबाईल : 09414156701, 09351343740)

• बेचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी **(BHMS)**

Faculty of Management Studies (FMS)

(फोनः 0294-2490632 मोः 9461260408, 9782049628)

• MBA • MHRM

Note : For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सबसे महत्वपूर्ण : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी

विश्वविद्यालय का 33वां स्थापना दिवस समारोह प्रतापनगर स्थित परिसर में संस्थापक मनीषी पं. जनार्दनराय नागर की प्रतिमा पर पुष्पांजली अर्पित कर मनाया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि राष्ट्र की शैक्षिक सामाजिक सास्कृतिक चेतना में विद्यापीठ अपनी भूमिका को निरंतर सक्रिय बनाये हुए है। आने वाली चुनौतियों का सामना कर हम मजबूती से अपना कदम आगे बढ़ा रहे हैं। आज का दिन हमारे लिए अपने सामाजिक दायित्वों को पूर्ण परिभाषित करने का है जिन मूल्यों और उद्देश्यों के लिए विद्यापीठ का निर्माण हुआ है। उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सबसे महत्वपूर्ण होती है। इसी गुणवत्ता युक्त शिक्षा से संस्थान की पहचान होती है।

कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि स्थापना दिवस हमारे लिए आत्मचिंतन का अवसर है। यह दिवस बीते दिनों में किए गए कार्यों के मूल्यांकन और दायित्वों का बोध एक साथ कराने का है क्योंकि अच्छे समाज को बनाने की जिम्मेदारी शिक्षा पर है। विद्यापीठ समग्र ग्रामीण समुदाय के उत्थान के लिए कार्य कर रही है जो कि संस्थापक जन्नु भाई का सपना था। समारोह को प्रो. जी.एम. मेहता, प्राचार्य प्रो. सुमन पामेचा, प्रो. मंजू माण्डोत, विशेषाधिकारी डॉ. हेमशंकर दाधीच प्रो. शशि चित्तौड़ा, डॉ. अमिया गोस्वामी, डॉ. शेलेन्द्र मेहता, डॉ. धीरज जोशी, डॉ. हेमेन्द्र चौधरी, डिप्टी रजिस्ट्रार रियाज हुसैन, डॉ. धमेन्द्र राजौरा, डॉ बलिदान जैन, प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर डॉ. युवराजसिंह राठौड़, प्रो. एल. आर. पटेल, डॉ. दिलीपसिंह चौहान, डॉ. मनीष श्रीमाली, डॉ. कुलशेखर व्यास, डॉ. हीना खान डॉ. सुनिता मूर्डिया, डॉ. अमी राठौड़, डॉ. रचना राठौड़, प्रो. मलय पानेरी, डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव, डॉ. गौरव गर्ग, डॉ. दिनेश श्रीमाली सहित सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, डीन, डायरेक्टर, कार्यकर्ता उपस्थित थे।

एमटीवी की नई सीरीजी 25 से

उदयपुर। सैक्स, कॉन्डोम, एबॉशर्न, टीबी। ये शब्द जब भी जोर से बोले जाते हैं, तो हम उसे रोक देते हैं। युवा भारतीय अपने दृष्टिकोण में खुले व बेबाक हैं, लेकिन इन बातों पर चर्चा करने के बारे में अभी भी समाज में हिचक है लेकिन 25 जनवरी के बाद एमटीवी अपनी नई सीरीज़ एमटीवी निषेध में इन सभी बातों पर खुलकर चर्चा करने तथा पुरानी मान्यताओं को तोड़ने का आग्रह करेगा।

भारत के नं. 1 युवा ब्रांड के रूप में एमटीवी सदैव से सामाजिक रोक-टोक पर खुलकर चर्चा करता आया है। एमटीवी निषेध के साथ यह ब्रांड हल्की व सामान्य वार्ता के द्वारा उन सामाजिक मुद्दों को उठाएगा, जिन पर अभी तक बात नहीं की जाती थी। एमटीवी निषेध का निर्माण विक्टर टांगो ने किया है और यह 25 जनवरी से हर शनिवार व रविवार रात 8 बजे एमटीवी पर प्रसारित होगा। यह शो कलर्स रिश्ते पर 1 फरवरी से हर शनिवार व रविवार, रात 10:30 बजे प्रसारित होगा एवं वूट पर स्ट्रीम किया जा सकेगा।

गिट्स में अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

उदयपुर। गीतांजली इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज डबोक में इलेक्ट्रॉनिक्स इन्जीनियरिंग एवं एमसीए विभाग के संयुक्त तत्वाधान में 'एज कम्प्यूटिंग एण्ड इट्स एप्लीकेशन इन आईओटी' पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।

संस्थान निदेशक डॉ. विकास मिश्र ने बताया कि सेमिनार का मुख्य उद्देश्य आने वाली इंटरनेट आधारित तकनीकी से विद्यार्थियों व फेकल्टी मेम्बर्स को रूबरू कराना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं प्रमुख वक्ता साईंस एण्ड टेक्नोलोजी नामिबिया युनिवर्सिटी के प्रो. धर्मसिंह ने एज कम्पयूटिंग, फॉग कम्पयूटिंग एवं रूफ कम्पयूटिंग से की विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि एज कम्प्यूटिंग क्लाउड कम्प्यूटिंग का विस्तार हैं जो सूचना को व्यवस्थित एवं संसाधित करती हैं। एज कम्प्यूटिंग द्वारा लोकल डेटा को रियल टाइम में विश्लेषण किया जाता हैं। आने वाले भविष्य में क्लाउड कम्प्यूटिंग के बाद एज कम्प्यूटिंग का प्रचलन सबसे ज्यादा रहेगा। उपरोक्त विषयों पर रिसर्च की अपार संभावनाएं हैं। आने वाले समय में स्मार्ट सिटी की जगह इंटेलीजेंट सिटी की आवश्यकता होगी जिसमें आईओटी एवं आर्टीफिशयल इन्टेलीजेंस जैसी चीजों का योगदान प्रमुख रहेगा।

उदयपुर में पहली बार हुई विदेशी नागरिक की न्यूरोसर्जरी

उदयपुर। पारस जे. के. अस्पताल में पहलीबार एक विदेशी नागरिक की न्यूरोसर्जरी की गई। न्यूरोसर्जन डॉ. अमितेन्दु शेखर ने बताया कि बेल्जियम निवासी हर्मन गैराल्ड के बाथरुम में गिरने पर उनकी पत्नी उन्हें पारस जे. के. अस्पताल लेकर आई। यहां न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. मनीष कुलश्रेष्ठ ने आपातकालीन चिकित्सा के बाद एमआरआई करवाई जिसमें मस्तिष्क के सीधे भाग की बड़ी नाड़ी में रुकावट का पता चला। इस पर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. अतुलाभ वाजपेयी व डॉ. मनीष कुलश्रेष्ठ ने क्लीनिकल

थ्रम्बोक्टमी करके उसे ठीक किया लेकिन बाद में सीटी स्केन करवाने पर मरीज की बड़ी नाड़ी में ब्लीडिंग का पता चला जो मरीज के लिए घातक थी। इससे लकवा या मृत्यु भी हो सकती थी।

डॉ. अमितेन्दु ने बताया कि इस दबाव को हटाने के लिए मरीज का डीकम्प्रेसीव क्रेनियाक्टेमी ऑपरेशन किया गया जिसके तहत दिमाग की हड्डी को निकालकर पेट के अंदर रखा गया। इससे मरीज के सिर में जगह बन गई और सूजन के कारण मरीज के छोटे दिमाग पर पड़ने वाला दबाव बंद हो गया। ऑपरेशन के दौरान मरीज की बड़ी नाड़ी में हाने वाले ब्लीडिग को भी बंद किया गया। कुछ दिनों बाद जब मरीज सामान्य स्थिति में आ गया तो एक छोटे ऑपरेशन द्वारा सिर की हड्डी को पेट से निकाल कर वापस लगा दिया। मरीज अब पूर्ण रुप से स्वस्थ है व अपने देश लौट चुका है।

डायरेक्टर विश्वजीत ने विदेशी नागरिक के जीवन रक्षक ऑपरेशन के लिए टीम को बधाई दी।

जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का शानदार आगाज

उदयपुर। जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट के पहले संस्करण का दिल्ली पब्लिक स्कूल मैदान पर रंगारंग आगाज हुआ। राजस्थान फुटबाल संघ के सहयोग से हिंदुस्तान जिंक द्वारा आयोजित किए जा रहे इस पहले टूर्नामेंट का अगाज जिंक के सहायक सीईओ अरुण मिश्रा, जावर माइन्स के प्रमुख बलवंतसिंह, दरीबा माइन्स के प्रमुख राजीव बोरा, उदयपुर फुटबाल संघ के सचिव शकील अहमद, जिला फुटबाल संघ के संयुक्त सचिव सुनील रोजर, सीनियर उपाध्यक्ष सैयद, दिल्ली पब्लिक स्कूल के प्रींसिपल संजय नरवरिया की मौजूदगी में 35 टीमों के बीच शीर्ष हुई प्रतिस्पर्धा से हुआ।

इसमें डीएवी एचजेडएल जावर माइंस के लड़कों और लकी फुटबाल क्लब की लड़कियों ने खिताब जीता और स्टेट चैम्पियनशिप के लिए क्वालीफाई किया, जिसका आयोजन जुलाई में जावर स्थित स्टेडियम में होना है। इस चैम्पियनशिप के माध्यम से राजस्थान की श्रेष्ठ टीमों का फैसला होगा। लड़कों के वर्ग में डीएवी एचजेडएल जावर माइन्स ने फाइनल में लकी फुटबाल क्लब को 2-0 से हराया। अर्जुन मीणा और जीतेंद्र मीणा ने गोल किए। लड़कियों के फाइनल में लकी फुटबाल क्लब ने यूथ क्लब सेवा मंदिर को 2-0 से हराया। लकी फुटबाल क्लब की भारती त्रिभान और रक्षिता शर्मा ने गोल किए।

जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने कहा कि आज मैं बहुत खुश हूं क्योकि बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक प्लेटफार्म मिल गया है और इनमें से श्रेष्ठ चुनकर आगे जाएगा।

राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीपसिंह शेखावत ने कहा कि जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट राजस्थान में फुटबाल की दिशा में एक मील का पत्थर है। हम इस बड़ी पहल के लिए हिंदुस्तान जिंक से जुड़कर खुश हैं। मैं यह देखकर खुश हूं कि उदयपुर की सभी टीमें यहां खेल रही हैं।

जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का मकसद राज्य में फुटबाल की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को तलाशना और उन्हें प्रोमोट करना है। जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का पहला संस्करण छह महीने तक चलेगा। इस टूर्नामेंट में राज्य के 33 जिलों की टीमें हिस्सा लेंगी। इसके लिए 500 से अधिक स्कूलों की टीमें बनेंगी और इससे 15 साल की कम उम्र के 5000 से अधिक लड़के और लड़कियों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का मौका मिलेगा।

फिजियोथेरेपी पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

उदयपुर। पारस जे. के. हॉस्पिटल में फिजियोथेरेपी पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में न्यूयोर्क, यूएसए की फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. मोनिका जैन ने नये व पुराने दर्द के प्रभावी उपचार हेतु माईन्डफुलनेस व ब्रीदिंग तकनीक का अभ्यास करवाया। हॉस्पिटल के जीएम मार्केटिंग रूपेश माथुर ने बताया कि हॉस्पिटल उदयपुर में वर्ल्ड क्लास तकनीक लाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में डॉ. मोनिका को उदयपुर में बुलाया गया। अस अवसर पर हड्डी एवं जोड़ प्रत्यारोपण विशेषज्ञ डॉ. आशीष, हृदय रोग विशेषज्ञ-सीटीवीएस सर्जन डॉ. जी. चन्द्रशेखर, डॉ. व्योम बोलिया तथा डॉ. जफर भी उपस्थित थे।

231 कुपोषितों को पौष्टिक आहार किट वितरित

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान एवं जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में जिले के आदिवासी

बहुल क्षेत्रों में कुपोषित परिवारों तक पौष्टिक आहार पहुंचाने के क्रम में 231 लोगों को मल्टी विटामिनयुक्त पोषाहार किट प्रदान किए गए।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि जिला प्रशासन द्वारा चिन्हित करीब 800 लोगों को हर पखवाड़े पौष्टिक आहार किट दिए जा रहे है। इनमें आटा, चावल, दाल, तेल, शक्कर, आयोडिनयुक्त नमक आदि शामिल हैं। उन्होंने बताया कि 'कुपोषण से जंग-पौष्टिक आहार के संग' अभियान की प्रभारी वन्दना अग्रवाल ने गत दिनों 14 क्षेत्रों में संस्थान सेवादूतों के साथ गांवों में जाकर 476 पौष्टिक आहार के किट प्रदान किए जिनमें झाड़ोल, मगवास, थोबावाड़ा, चंदवास, गोरण, उखलियात, भानपुरा, कड़ा और पीपलबारा शामिल हैं।

काल के अकाल पर त्रिकाल के सिलसिले

-हरीश व्यास-

अकाल का इतिहास मानव सभ्यता के इतिहास से पुराना तो नहीं हो सकता। प्रामाणिक दस्तावेजों को टटोला जाए तो प्रमाणों के आधार पर विश्व का सबसे पहला अकाल साढ़े पांच हजार वर्ष पूर्व (ईसा पूर्व 3500) मिस्त्र में पड़ा जब नील नदी सात वर्ष तक सूखी पड़ी रही।

ईसा पूर्व 436 (बी.सी.) में रोम का अकाल भी बड़ा भयावह था जब भूख से बेहाल हजारों लोगों ने टाइबर नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली। इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार सन् 310 में इंग्लैण्ड में पड़े अकाल में चालीस हजार लोग अकाल मौत के शिकार हो गए। सन् 879 में विश्वव्यापी अकाल पड़ा जिसके प्रभाव में पूरी दुनिया आ गई। ऐसे ही अकाल की पुनरावृत्ति 1162 में हुई जिसे युनीवर्सल फैमीन की संज्ञा दी गई।

सन् 650 में सम्पूर्ण भारत वर्ष में अकाल पड़ा। सम्भवतया यह देश का पहला अकाल था। भारत में ये देशव्यापी अकाल सन् 941, 1022, 1033, 1148 से 59 लगातार ग्यारह वर्ष में पड़े। इसी प्रकार 1344-45, 1594-98, 1857, 1876-78, 1897, 1900-1901 में अकाल पड़े।

इन छपन्याकालों में दस लाख लोगों की अकाल मृत्यु के उल्लेख मिलते हैं। सन् 1876-78 के दौरान पूरे देश में अकाल पड़ा। मद्रास में सन् 1876 में राहत कार्यों की शुरूआत की हुई। सन् 1662 में राजसमन्द झील का निर्माण अकाल राहत के तहत शुरू किया गया। मेवाड़ का यह पहला भीषण अकाल था तथा राजसमन्द झील का कार्य देश का सर्वप्रथम अकाल राहत कार्य था। उदयपुर जिले में 1764 में भीषण अकाल पड़ा जब आटा एवं इमली का एक ही भाव हो गया। सन् 1812-13 में मेवाड़ में फसलें सूख गई। मवेशियों के लिए चारे का संकट पैदा हो गया।

मेवाड़ में सर्वाधिक अकाल क्षेत्र कोटड़ा तहसील रहा जहां आजीविका के संकट के साथ पशुधन की बर्बादी ने सब कुछ लूट लिया। दुधारू जानवर तो गए सो गए पर बैलों के चले जाने से खेती का सारा कामकाज ठप्प पड़ गया। आजीविका के लाले पड़े रहे। बैलों की खरीद का तो स्वप्न ही नहीं लिया जा सकता। ऐसी स्थिति में घर की औरतें और बच्चे ही बैलों की जगह जुत गए।

सन् 1868-69 में मेवाड़ के साथ-साथ पूरे राजपूताने में अकाल पड़ा। तब महाराणा शम्भूसिंह ने खाद्यान्न के लिए अपने कोष से एक लाख रूपये व्यापारियों को दिये ताकि गांव-गांव जाकर निर्धनों को अनाज बांटा जा सके।

कानोड़ की हवेली में खैरातखाना खोलकर बाकली (उबली मक्की) एवं भूंगड़े (भुने हुए चने) बांटने का आदेश दिया। इससे हजारों लोगों की जान बच गई।

एक लाख अस्सी हजार रूपयों की लागत से कई कार्य शुरू कराए गए जिनसे सवा चार लाख लोगों को मजदूरी मुहैया हुई। इस अकाल में पैंसठ फीसदी पशु मौत के शिकार हुए। हैजा एवं बुखार से कई लोग पीड़ित हुए लेकिन मूल्यों पर नियंत्रण किया गया।

उन दिनों गेहूं एक रूपये का सात सेर तथा मक्का साढ़े आठ सेर थी। इस अकाल को 'त्रिकाल' नाम दिया गया।

इस अकाल की विभीषिका का सर्वाधिक प्रभाव बीकानेर, मारवाड़ एवं मेवाड़ पर पड़ा। मेवाड़ के साथ डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा रियासत में अकाल का प्रभाव बड़े पैमाने पर दृष्टिगोचर हुआ।

एक चौथाई आदिवासी अकाल मौत के शिकार हुए। मेवाड़ रियासत में छपन्याकाल के दौरान पांच लाख तियासी हजार एक सौ छियालीस रूपयों की लागत के एक सौ पैंतीस राहत कार्य कराये गए। बांसवाड़ा रियासत में 651 राहत कार्यों पर पचहत्तर हजार 167 तथा डूंगरपुर में नौ राहत कार्यों पर एक लाख बीस हजार 726 रूपये खर्च किये गए।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में मेवाड़ छपन्याकाल से उबरा भी नहीं था कि 1901-02 में पुनः अकाल का सामना पड़ा। इस तरह मेवाड़ में 1905-06, 1911-12, 1915-16, 1918-19, 1928-29, 1951-52, 1958-59, 1965-66, 1968-69, 1970-71, 1972-73 कमोबेश अकाल के वर्ष रहे।

वर्ष 1981-82 के बाद भी बीच-बीच में वर्षा की कमी रही लेकिन इन वर्षों में राहत कार्यों की अधिकता से अकाल का वैसा प्रभाव नहीं रहा जैसा कि उन्नीसवीं शताब्दी में देखने को मिला।

कनोड़ियनों के बीच रक्तदान और स्वस्थ्य वार्ता

उदयपुर। उदयपुर में निवास कर रहे कानोड़ के निवासियों के मैत्री संगठन कानोड़ मित्र मंडल का ब्लड डोनेशन कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता संगोष्ठी रविवार 12 जनवरी को आयड़ जैन मन्दिर सभागार में आयोजित की गई। ब्लड डोनेशन कैंप में 44 रक्त-वीरों ने रक्तदान किया। शिविर में मूत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. एच. एल. खमेसरा ने प्रोस्टेट पर, अस्थि रोग विशेषज्ञ डॉ. बी. एल. कुमार ने ऑस्टियोपोरोसिस एवं अर्थराइटिस के कारण एवं निदान पर विस्तृत जानकारी दी। इस मौके पर जनरल फिजिशियन डॉ. सरोज मेहता, दंत चिकित्सक डॉ. नीलेश भानावत एवं अंशा श्रीमाल भानावत, होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. अमित मेहता, आयुर्वेदाचार्य कनकप्रसाद व्यास ने स्वास्थ्य के प्रति विभिन्न प्रकार की जानकारियां साझा की।

सुंदरलाल अलावत, डॉ. भरतराज अलावत, डॉ. बी.एल. कुमार, डॉ. एच.एल. खमेसरा तथा हिमांशुराय नागोरी

इस अवसर पर मित्र मंडल के अध्यक्ष हिमांशुराय नागौरी, महासचिव दिलीप कुमार भानावत, डॉ. महेंद्र भानावत, निर्भयसिंह बाबेल, राजेश भानावत, लोकेशकुमार बाबेल, प्रदीपकुमार दक, गिरिराज सोनी, संजय अलावत, जीवनसिंह पोखरना, तेजसिंह पोखरना, गरिमा बाबेल, सरोज सोनी, सुनीता दक, कविता भानावत, धर्मचंद नागोरी, मनीष सहलोत, संजय वया, विनोद मुरडिया, कोमल वया, गौतम मेहता, निर्मल धींग, ललित व्यास, अनिल पुरोहित, महमूद खान पठान, युसूफ खान पठान, भव्य बाबेल, प्रखर बाबेल, गगन दक, प्रियांश भानावत, मोहित सोनी, दीपेश सोनी, हिमांशी भानावत, लोकेश मल्हारा, सांची दक, सृष्टि मल्हारा उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुंदरलाल अलावत ने की जबकि मुख्य अतिथि डॉ.भरतराज अलावत थे। संचालन श्रीमती चंद्रकला पोखरना ने किया।

समाज में डाक्टर की अहमियत

डॉ. बी. एल. कुमार ने अपने व्याख्यान के दौरान इस बात पर समाजजनों का ध्यान आकृष्ट किया कि समाज में डाक्टरों की अहमियत नहीं है कारण कि वे पुलिस तथा न्यायाधीश की तरह अधिकार सम्पन्न तथा प्रभावी भूमिका नहीं रखते हैं। उन्होंने अफसोस व्यक्त किया कि ऐसी स्थिति में कई बार गम्भीर रोगियों का इलाज करते समय ठिठक जाना पड़ता है। मन में यह संकोच रहता है कि रोगी कहीं अदालत में नहीं चला जाय। रोगी तो इसका खामियाजा भुगतता ही है पर समाज को भी इससे जबर्दस्त नुकसान भोगना पड़ता है। इस बाबत गम्भीर चिन्तन की आवश्यकता है।

मुफ्त चिकित्सा परामर्श

कानोड़ निवासी फिजीसियन डॉ. भरतराज अलावत ने कहा कि गत दो वर्ष से वे अपने हिरणमगरी सेक्टर 3 स्थित निवास पर प्रतिदिन सायं 4 से 6 बजे तक निशुल्क परामर्श देते आ रहे हैं। अगली फरवरी से वे जरूरतमंद रोगियों को 100 दवाइयां निशुल्क सुलभ कराने को संकल्पित रहेंगे।

शब्दरंजन में सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि बनायें।

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

उमराव बाबेल द्वारा गांवड़े में कम्बलें वितरित

उदयपुर निवासी स्व. रोशनलाल बाबेल की सहधर्मिणी उमराव बाबेल ने अपनी माता सोहनबाई नलवाया (93) के साथ उनके वणिक गांवड़े अरनिया जाकर 60 कम्बलें वितरित कीं। उन्होंने बताया कि मेरे पिता श्री अमरचन्दजी नलवाया और उनके निधन के बाद माताजी ने वहां वणज कर अपनी गृहस्थी चलाई।

सोहनबाई ने बताया कि कानोड़ से पांच किलोमीटर दूर अरनिया उनके दादा जीतमलजी एवं पिता प्रतापमलजी भानावत का पुश्तैनी वणज गांवड़ा रहा। पिताजी के निधन के बाद माता डेलूबाई ने वहां वणज किया। उनके साथ भाई नरेन्द्र-महेन्द्र भी गांवड़ा सम्भालते रहे। इस दौरान उमराव भी अरनिया वालों के सम्पर्क में रही सो गांव वालों से अति लगाव हो गया। अचानक मुझे गांव वालों की याद आ गई सो उमराव को साथ ले जाकर उनसे मिलने के साथ ही सर्दी से बचाव के लिए उसने कम्बलें वितरित करने का शुभ कार्य भी कर दिया।।

देश और प्रदेश के हर व्यक्ति को विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराता संभाग का सर्वश्रेष्ठ हॉस्पीटल व मेडिकल कॉलेज

14.50 लाख से अधिक मरीजों का सफल उपचार | 800 बेडेड हॉस्पीटल | 70 बेडेड आई.सी.यू. | 18 बेडेड डायलिसिस युनिट | 16 ऑपरेशन थियेटर

PIMS हॉस्पिटल, उमरड़ा, उदयपुर

मल्टीसुपरस्पेशियलिटी सुविधाएं

- कार्डियक सर्जरी
- कार्डियोलॉजी
- न्यूरोलॉजी
- न्यूरो सर्जरी
- यूरोलॉजी
- कैंसर सर्जरी
- प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी
- पीडियाट्रिक सर्जरी
- नेफ्रोलोजी

जनरल स्पेशियलिटी सुविधाएं

जनरल मेडिसिन | प्रसूति एवं स्त्री रोग | जनरल सर्जरी | नाक, कान, गला | हड्डी एवं जोड़ रोग
त्वचा एवं चर्म रोग | टी.बी. चेस्ट एवं श्वास रोग | बाल चिकित्सा | नेत्र रोग | मनोरोग चिकित्सा

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं

आयुष्मान भारत महात्मा गांधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना | राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम | राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी | परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना | डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert)

▸ मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸ आई सी.सी.यू. ▸ आई.सी.यू. ▸ पी.आई.सी.यू. ▸ एन.आई. सी.यू. ▸ बर्न आई.सी.यू. ▸ ब्लड बैंक

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

MBBS, M.Sc. (Medical Sciences)

वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग
B.Sc., M.Sc. (नर्सिंग)

वेंकटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग
GNM

वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ फिजियोथैरेपी
BPT

वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी
D. Pharmacy

Ph.D. PROGRAMME

▸ Anatomy ▸ Biochemistry ▸ Physiology
▸ Pharmacology ▸ Microbiology ▸ Nursing

For Admission enquiry contact : 9587890081, 9587890082

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 | Phone : 0294-3010000, Mob.: 8696440666 | Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।